'अप्प दीपो भव'

वॉयस ऑफ बुद्धा

प्रकाशन तिथि–15 अप्रैल, 2013

DL(ND)-11/6144/2013-14-15

R.N.I. No. 68180/98

मूल्य : पाँच रूपये

प्रेषक : डॉ0 उदित राज (राम राज) चेयरमैन - जस्टिस पब्लिकेशंस, टी–22, अतुल ग्रोव रोड, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली–110001, फोन : 23354841-42

Website : www.uditraj.com E-mail: dr.uditraj@gmail.com

● वर्ष : 16 ● अंक 10 ● पाक्षिक ● द्विभाषी ● 1 से 15 अप्रैल, 2013

बाबा अम्बेडकर के 123वीं जन्म दिवस पर आप सबको बधाई।

- डॉ. उदित राज

महानतम भारतीय 'बाबा साहेब'

सतह से उठे बाबा साहेब 'एक महानतम भारतीय'

आउटलुक पत्रिका, अगस्त–सितम्बर 2012 अंक के अनुसार आयोजकों ने महानतम भारतीय के चयन हेतु तीन चरण की प्रक्रिया अपनाई जिसमें मतदान एवं सर्वे के बाद 10 महान भारतीयों में संविधान निर्माता, भारत रत्न, बौधिसत्व बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर को महानतम भारतीय (ग्रेटेस्ट इंडियन) चुना गया।

तीन चरण में जूरी (28 प्रबुद्ध भारतीय), ऑनलाइन मतदान एवं मिस्ड कॉल, मार्केटिंग रिसर्च (सर्वे–नील्सन कंपनी) आदि के सर्वेक्षण में ग्रेटेस्ट इंडियंस की फाइनल रैकिंग टाप टेन सूची में डॉ. अम्बेडकर प्रथम स्थान पर रहे।

दूसरे चरण में इंटरनेट और मिस्ड कॉल से मिले मत (लोकप्रिय मत)

रैंक	नाम	मत
1.	**डॉ. भीमराव अम्बेडकर**	**19,91,734**
2.	ए.पी.जे अब्दुल कलाम	13,74,431
3.	बल्लभ भाई पटेल	5,58,835
4.	अटल बिहारी वाजपेई	1,67,378
5.	मदर टेरेसा	92,645
6.	जे. आर. डी. टाटा	50,407
7.	सचिन तेंदुलकर	47,706
8.	इंदिरा गांधी	17,641
9.	लता मंगेशकर	11,520
10.	जवाहर लाल नेहरू	9,921

डॉ. अम्बेडकर का विचार दर्शन

■ समाज में शिक्षा ही समानता ला सकती है। जब मनुष्य शिक्षित हो जाता है तो उसमें विवेक, सोचने की शक्ति पैदा हो जाती है। तब न वह खुद पर अत्याचार सह सकता है और न वह दूसरों पर अत्याचार होते देख सकता है।

■ तुम्हें अपनी गरीबी स्वंय ही दूर करनी होगी, तुम्हारी गरीबी को भगवान या कोई देवता या कोई बड़ा नेता दूर कर देगा, इस विचार को तुरन्त मन से निकाल दो।

■ मैं ऐसा मार्ग चुनूंगा जो देश के लिए हानिकारक ना हो। मैं बौद्ध धर्म स्वीकार करके अपने देश के प्रति सबसे बड़ा उपकार कर रहा हूं क्योंकि बौद्ध धर्म भारतीय संस्कृति और इतिहास की परम्परा को किसी प्रकार की हानि न पहुंचायें।

■ योग्य नेता हो तो उसके प्रति आदर प्रकट करने में कोई हर्ज नहीं परन्तु मनुष्य ईश्वर के बराबर मान बैठना विनाश का मार्ग है। इससे नेता के साथ ही साथ उसके भक्तों का भी अन्ध पतन हो जाता है।

■ किसी गुलाम व्यक्ति को सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक गुलामी से छुटकारा दिलाया जा सकता है, लेकिन मानसिक तौर से गुलाम हुए व्यक्ति को उसकी गुलामी से छुटकारा दिलाना बहुत कठिन है।

अम्बेडकर और दलित

डॉ. उदित राज

यदि दलितों का सबसे बड़ा त्योहार है तो वह है डॉ. अम्बेडकर जयंती और सबसे बड़े भगवान भी वही हैं। इस बार 123वीं जयंती मनायी जा रही है और यह सभी जानते हैं कि उनका जन्मदिन 14 अप्रैल को पड़ता है। लोग जयंती 10 अप्रैल से ही मनाना शुरू कर देते हैं, अप्रैल माह में तो यह सिलसिला चलता ही रहता है। मई माह में भी जयंती का कार्यक्रम चलता रहता है। कर्मचारियों, अधिकारियों के संगठनों द्वारा जयंती जुलाई और अगस्त तक भी मनायी जाती रहती है। ऐसा इसलिए भी कि यह उनके व्यक्तिगत सुविधा से संबंधित है। जब अप्रैल और मई माह में माहौल नहीं बन पाता और प्रभावशाली अतिथि, जो प्रायः विभाग के मंत्री या अधिकारी होते हैं तो उन परिस्थितियों में इस कार्यक्रम को अगस्त तक खींच लिया जाता है। डॉ. अम्बेडकर के निर्वाण के बाद उनका कद दिन–प्रतिदिन बढ़ता ही गया। इनकी जयंती सरकार द्वारा नहीं मनायी जाती है। भारत ही नहीं बल्कि दुनिया में शायद ही कोई ऐसा व्यक्तित्व होगा कि जिसके जन्मदिन पर पूरे देश के गली, गांव, कस्बा, शहर अम्बेडकर जयंती से पटा रहता है। इसके विपरीत गांधी एवं तमाम अन्य महापुरुषों की जयंती सरकारी कार्यक्रम के द्वारा संचालित होते हैं ना कि जनता जनार्दन द्वारा, अगर होता भी है तो निम्न स्तर पर। व्यक्ति प्रसिद्ध हो सकता है लेकिन यदि विचार एवं सिद्धांत से समाज को फायदा नहीं होता है तो ऐसे लोग इतिहास के पन्नों तक ही सीमित हो जाते हैं।

डॉ. अम्बेडकर को मानने वाले अधिकतर गला फाड़कर के कहते नहीं थकते कि वे बाबा साहेब का मिशन चला रहे हैं। यह भी प्रतिस्पर्धा बनी रहती है कि कौन शुद्ध अम्बेडकरवादी है और कौन नकली। बहुजन समाज पार्टी की स्थापना भी 14 अप्रैल के दिन ही हुई थी और यह जानना मुश्किल नहीं है कि इस दिन ही क्यों? लोग नारे लगाने लगे कि बाबा साहेब का मिशन अधूरा, कांशीराम करेंगे पूरा। लोगों में आकर्षण बढ़ा और देश के कोने–कोने में चिंतन और सभाएं इत्यादि की जाने लगी। पंजाब, हरियाणा में शुरुआती दौर में अच्छी सफलताएं हासिल की

और धीरे–धीरे उत्तर प्रदेश इनके आंदोलन का केंद्र बनता गया। समर्थकों को एक बड़े सपने से जोड़ दिया कि अब मान–सम्मान एवं अधिकार सत्ता काबिज करके ही ले सकेंगे। डॉ. अम्बेडकर को दलितों को संगठित करने के लिए अपने तरह से प्रस्तुतीकरण किया जो कि उनके

शेष पृष्ठ 2 पर...

मीडिया में दलितों के साथ दलित समस्याएं भी अनुपस्थित

संजय कुमार की पुस्तक 'मीडिया में दलित ढूंढते रह जाओगे' का लोकार्पण

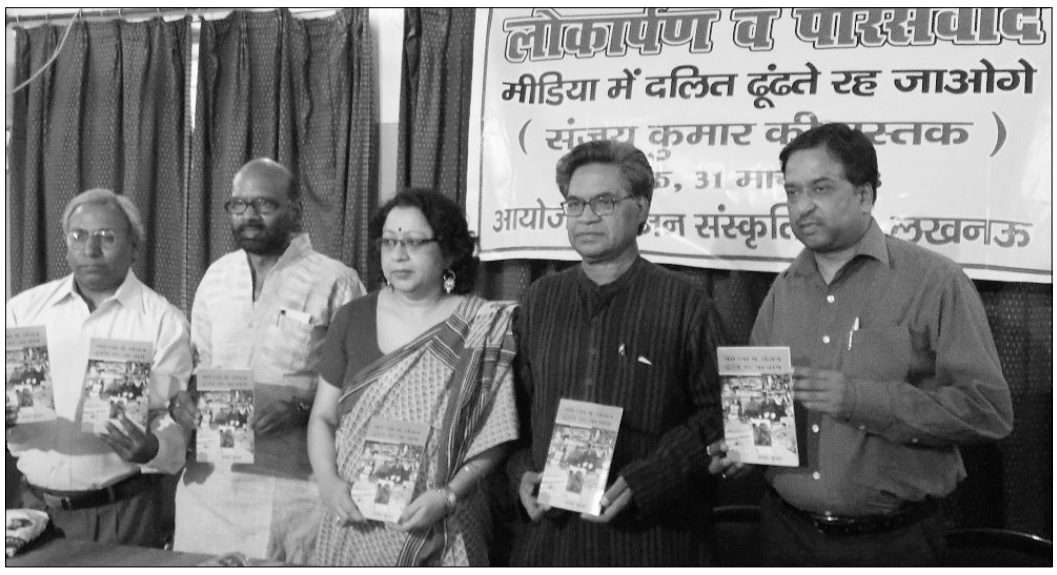

कौशल किशोर

मीडिया में दलितों के साथ दलित समस्याएं भी अनुपस्थित है। साथ ही वे अगर मीडिया में आ भी जाये तो करेंगे क्या? एक बड़ा सवाल मौजूद है, जिस पर समग्र रूप से विचार करने की जरूरत है। मुख्य धारा की मीडिया को जनतांत्रिक कैसे बनाया जाये इस पर भी विमर्श की आवश्यकता है। गत् दिनों 31 मार्च को यू.पी प्रेस क्लब लखनऊ में लेखक व पत्रकार संजय कुमार की किताब 'मीडिया में दलित ढूंढते रह जाओगे' के लोकार्पण के बाद वक्ताओं ने परिसंवाद में यह बातें कही। पुस्तक का लोकार्पण संयुक्त रूप से मानवाधिकार कार्यकर्ता व दलित चिंतक एस आर दारापुरी, जाने माने आलोचक वीरेन्द्र यादव, प्रगतिशील महिला एसोसिएशन की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष ताहिरा हसन, दलित चिंतक अरूण खोटे और जसम के संयोजक कौशल किशोर ने किया।

प्रिसंवाद के दौरान जाने माने आलोचक वीरेन्द्र यादव ने कहा कि मीडिया में मुकम्मल भारत की तस्वीर नहीं हैं, गांव नहीं है, हाशिये का समाज नहीं है। मीडिया में दलितों के साथ दलित समस्याएं भी अनुपस्थित है। आज समाज को समग्र नजरिये से देखने की जरूरत है। उपस्थिति के साथ, दलित समाज के आलोचना की जरूरत के लिए भी मीडिया में दलितों की आवश्यकता है।

वहीं दलित चिंतक अरूण खोटे ने कहा कि इतिहास में जायें तो दलित ही मीडिया के जनक रहे हैं। इसके बावजूद शिक्षा और संसाधनों से वंचित यह वर्ग अब मीडिया से गायब हो गया है। आज बात सिर्फ मीडिया में दलितों के प्रतिनिधित्व नहीं है, बल्कि दलितों के मुद्दों के लिए क्या यहां जगह है–सवाल यह भी है।

दलित चिंतक एस. आर. दारापुरी ने कहा कि दलितों के साथ अब भी भेदभाव बरकरार है। लेकिन यह सब मीडिया में खबर नहीं बनती है, क्योंकि मीडिया भी उसी द्विज वर्चस्व को बरकरार रखना चाहता है। उन्होंने कहा कि मीडिया में दलित नहीं है यह सच्चाई है तो सवाल यह है कि हम क्या करें। ऐसे में दलित मीडिया को आगे लाने की जरुरत है। दूसरी ओर महिला एसोसिएशन की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष ताहिरा हसन ने कहा कि राजनीति को समझते हुए दलितों और मुस्लमानों को एक साथ आगे आना होगा और लामबंद तरीके से लड़ाई लड़नी होगी। जसम के संयोजक कौशल किशोर ने कहा कि कहने को तो लोकतांत्रिक व्यवस्था है लेकिन सामाजिक बराबरी आज भी दुर्लभ है। मीडिया को लोकतंत्र का चौथा खंभा कहा जाता है परन्तु इसकी बनावट जातिवादी तथा दलित विरोधी है। दलित मीडिया से जुड़ना तो चाहते हैं, लेकिन उन्हें जान–बूझकर इससे दूर रखा जाता है। यदि कोई प्रतिभाशाली और योग्य दलित मीडिया में प्रवेश भी पा लेता है तो उसे शीर्ष तक पहुंचने नहीं दिया जाता, बल्कि उसे बाहर का रास्ता दिखाने के लगातार उपाय ढूंढे जाते हैं।

पुस्तक के लेखक और आकाशवाणी पटना के समाचार संपादक संजय कुमार ने कहा कि मीडिया को लोकतंत्र का चौथा खंभा कहा जाता है परन्तु इसकी बनावट जातिवादी तथा दलित विरोधी है। दलित मीडिया से जुड़ना तो चाहते हैं, लेकिन उन्हें जान–बूझकर इससे दूर रखा जाता है। यदि कोई प्रतिभाशाली और योग्य दलित मीडिया में प्रवेश भी पा लेता है तो उसे शीर्ष तक पहुंचने नहीं दिया जाता, बल्कि उसे बाहर का रास्ता दिखाने के लगातार उपाय ढूंढ़े जाते हैं। उन्होंने राष्ट्रीय मीडिया के सर्वे का हवाला देते हुए कहा कि मीडिया में दलित ढूंढते रह जायेंगे। सर्वे के अनुसार कुल जनसंख्या में 8 प्रतिशत वाली ऊँची जातियों का मीडिया हाऊस में 71 प्रतिशत शीर्ष पदों पर कब्जा है। इनमें 49 प्रतिशत ब्राह्मण, 14 प्रतिशत कायस्थ, वैश्य और राजपूत 7–7 प्रतिशत, खत्री–9, गैर द्विज उच्च जाति–2 और अन्य पिछड़ी जाति 4 प्रतिशत हैं। इनमें दलित कहीं नहीं दिखते। श्री कुमार ने कहा कि राजनैतिक रूप से जागरूक बिहार की राजधानी पटना के मीडिया घरानों में काम करने वालों के भी सर्वे है। सर्वे के मुताबिक बिहार के मीडिया में सवर्णों का 87 प्रतिशत कब्जा है। इनमें ब्राह्मण–34, राजपूत–23, भूमिहार–14 और कायस्थ–16 प्रतिशत है। शेष 13 प्रतिशत में पिछड़ी जाति, अति पिछड़ी जातियों, मुसलमानों और दलितों की हिस्सेदारी है। इनमें सबसे कम लगभग 01 प्रतिशत दलित पत्रकार ही बिहार की मीडिया से जुड़े हैं। सरकारी मीडिया में लगभग 12 प्रतिशत दलित है। जसम की ओर से आयोजित इस कार्यक्रम में नाटककार राजेश कुमार, अलग दुनिया के के. के. वत्स, कवि आलोचक चंद्रेश्वर सहित कई चिर्चित पत्रकार–साहित्यकार उपस्थित थे।

विषय पर परिसंवाद का आयोजन जन संस्कृति मंच ने यू0 पी0 प्रेस क्लब में किया गया। कार्यक्रम का संचालन जसम के संयोजक कौशल किशोर ने किया।

शेष पृष्ठ । का...

अम्बेडकर और दलित

सिद्धांत के काफी विपरीत दिशा में था। उनके विचार का मूल सार यह है कि भारतीय समाज को दुरूस्त करने के लिए जातियों को तोड़ना प्रथम शर्त है। जात–पात तोड़क मंडल ने डॉ. अम्बेडकर को 1935 में लाहौर में सम्मेलन के लिए अध्यक्षता के लिए अनुरोध किया, पहले तो वे स्वीकार नहीं किए लेकिन दबाव बनाया गया और अंततः मान लिया। जब जात–पात तोड़क मंडल के लोगों को पता लगा कि उनका भाषण व्यवस्था परिवर्तन का होगा अर्थात् जाति–उन्मूलन का तो सम्मेलन को ही रद्द कर दिया। सूचना भी उनके अध्यक्षीय भाषण छपने के बाद दी गयी, इससे वे बहुत आहत हुए। जिस डॉ. अम्बेडकर ने एक इंच भर का समझौता नहीं किया लेकिन उनके सिद्धांतों पर बनी पार्टी ने जाति उन्मूलन की बात तो दूर, विभिन्न जातियों के प्रकोष्ठ बनाकर के हिंदू सामाजिक व्यवस्था को मजबूत करने का ही काम किया है। जाति मजबूत होने से ब्राह्मणवाद मजबूत होता है और उससे विषमता वाला समाज जन्म लेता है। भले ही सत्ता प्राप्त करने के लिए जातीय भावना को कोई भुनाए और लगभग सभी दल कर भी रहे हैं इस पर ऐतराज नहीं है लेकिन नाम उस सामाजिक परिवर्तन के योद्धा का लिया जाए और काम उल्टा हो तो यह उनके विचार पर चलने की बात ही कहां पैदा होती है।

एक पल के लिए यदि कोई सोचे कि राजनीति एवं सरकारी नौकरियों में आरक्षण अनुसूचित जाति और जनजाति के लिए नहीं हुआ होता तो आज यह समाज वहीं खड़ा रहता जो आजादी के पहले का था। इसका अंदाज लगाना बिल्कुल मुश्किल नहीं है क्योंकि अन्य क्षेत्रों जैसे मीडिया, उद्योग, व्यापार, शेयर, फिल्म, आयात–निर्यात, उच्च शिक्षा, निर्माण, टेलीकॉम एवं आईटी आदि में अभी भी इनकी भागीदारी लगभग शून्य है। आरक्षण अधिकार के लिए डॉ. अम्बेडकर ने संघर्ष किया, इस सोच के साथ कि जो लोग जनता से चुने जाएंगे या सरकारी नौकरियों में विभिन्न पदों पर होंगे, वे दलित आदिवासी समाज के हितों को सर्वोपरि मानेंगे लेकिन बहुसंख्यक लोग स्वार्थी एवं घमंडी हो गए हैं। बड़े अधिकारी ज्यादा ही अहंकारी और अपने आप को विद्वान समझते हैं जबकि वे भूल जाते हैं कि आरक्षण के बगैर वे यहां तक नहीं पहुंच पाते हैं। जो भी आरक्षण के जरिए पद और प्रतिष्ठा और धन–संपत्ति अर्जित किए हैं, उनके ऊपर समाज का ही नहीं बल्कि उन नेतृत्व का भी कर्ज है जिन्होंने संघर्ष किए हैं। कांशीराम जी कर्मचारियों–अधिकारियों से काफी हद तक बुद्धि, दान एवं समय लिया और उसी का प्रतिफल बहुजन समाज पार्टी है। फिर भी ज्यादातर जन प्रतिनिधि और कर्मचारी आरक्षण का लाभ अपने निजी स्वार्थ के लिए ही ले रहे हैं।

जाति उन्मूलन या समता मूलक समाज की स्थापना के लिए बौद्ध धर्म का मार्ग सुझाया गया लेकिन कितने दलित–आदिवासी इसको मान रहे हैं। शायद ही डॉ. अम्बेडकर के इस कथन को कोई उद्धृत ना करता हो कि उन्होंने कहा था ''मैं हिंदू धर्म में पैदा हुआ यह मेरे वश में नहीं था लेकिन इसमें मरूंगा नहीं।'' कितने इनके नाम पर रोटी सेंकने वाले बौद्ध धर्म को मानते हैं यह किसी से छुपा नहीं है। नौकरी आरक्षण के जरिए मिलती है तो पूजा–पाठ हिंदू देवी देवता के करते हैं कि उनके वजह से ऐसा हुआ। डॉ. अम्बेडकर ने कहा था कि किसी भाग्य और भगवान में विश्वास ना करो और जो भी होगा स्वंय की शक्ति से ही। 33 करोड़ हिंदू देवी–देवताओं की कल्पना की जाती है और आजादी के समय देश की आबादी लगभग 45 करोड़ ही थी, अगर दलित आदिवासी की संख्या निकाली जाए तो लगभग 11 करोड़ बनती है। यदि 3 देवी–देवता एक–एक दलित का भी उत्थान करते तो उन्हें अछूत की जिंदगी नहीं जीना पड़ता। इन देवी–देवताओं की कृपा से तमाम कर्मचारी–अधिकारी जनप्रतिनिधि बन गए होते। यहां पर भी दलित आदिवासी क्या कर्मकांड, भाग्य भगवान को छोड़ पाए।

वर्तमान में कुछ दलित नेता भ्रष्टाचार में गले तक डूबे हुए हैं। वो कैसे अपने आप को अंबेडकरवादी कह सकते हैं जबकि डॉ. अम्बेडकर जैसा बौद्धिक ईमानदार व्यक्ति शायद ही पैदा हुआ होगा। वह किसी को भी नहीं छोड़ते थे। जो बौद्धिक स्तर पर ईमानदार होगा वह आर्थिक भ्रष्टाचार कर ही नहीं सकता और ना ही स्वार्थी और ना लालची होगा। उसका धन–संपत्ति और प्रतिष्ठा वह सब कुछ समाज उत्थान ही होगा। क्या अंबेडकरवादी झूठ बोल सकता है? जाति भावना को अपने स्वार्थ में इस्तेमाल करते हुए सत्ता में पहुंचने के लिए जो भी अनैतिक रास्ते अपनाने हों, कोई संकोच नहीं। डॉ. अम्बेडकर ने कहा था कि स्त्रियों के तरक्की से ही दलित समाज के प्रगति को मापा जा सकता है। कितने लोग हैं जो स्त्रियों की आजादी, समानता और बराबर का हक देने के पक्ष में हैं या उसके लिए संघर्ष करते हैं। अंततः वे भी पुरुषवादी सोच से ऊपर नहीं उठ सके हैं। इतना कहा जा सकता है कि दलित स्त्रियां सवर्णों से ज्यादा आजाद हैं। शिक्षा पर सबसे ज्यादा महत्व डॉ. अम्बेडकर ने दिया लेकिन उस पर भी यह समाज खरा नहीं उतरा। यदि नौकरी की लालच नहीं होती तो जो शिक्षा आ भी सकी है वो भी नहीं आ पाती। उनके अनुसार, शिक्षा का मतलब ना केवल रोजगार का साधन खोजना बल्कि एक ऐसे समाज की स्थापना कर जो समता मूलक समाज हो। जो जातियां अम्बेडकरवादी हो भी गए हों वे दूसरे दलित जातियों को जागृत करने के लिए कोई प्रयास नहीं कर रहे हैं, इसे केवल रोजगार एवं नौकरी प्राप्त करने का साधन बना लिया है।

डॉ. अम्बेडकर का विचार ना केवल दलितों के उत्थान के लिए जरूरी है बल्कि देश में समता मूलक समाज को स्थापित करने के लिए है। जैसे–जैसे समय बीत रहा है वैसे–वैसे इनका प्रभाव बढ़ता जा रहा है। यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगा कि भविष्य में इनसे बड़ा व्यक्तित्व वाला कोई नहीं होगा। भले ही सवर्ण मानसिकता के वजह से इनके साथ न्याय नहीं हुआ लेकिन सच बहुत दिनों तक छुपता नहीं। निजीकरण एवं भूमंडलीकरण के दौर में अब तो स्वार्थी दलित बाज आएं और इनके विचारों पर चलकर के अपनी प्रगति को कम से कम बरकरार रख सकें और आगे प्रगति करना तो ऐसे हालात में मुश्किल लग रहा है।

पूनम तुषामड़ की 'मेले में लड़की' का लोकार्पण

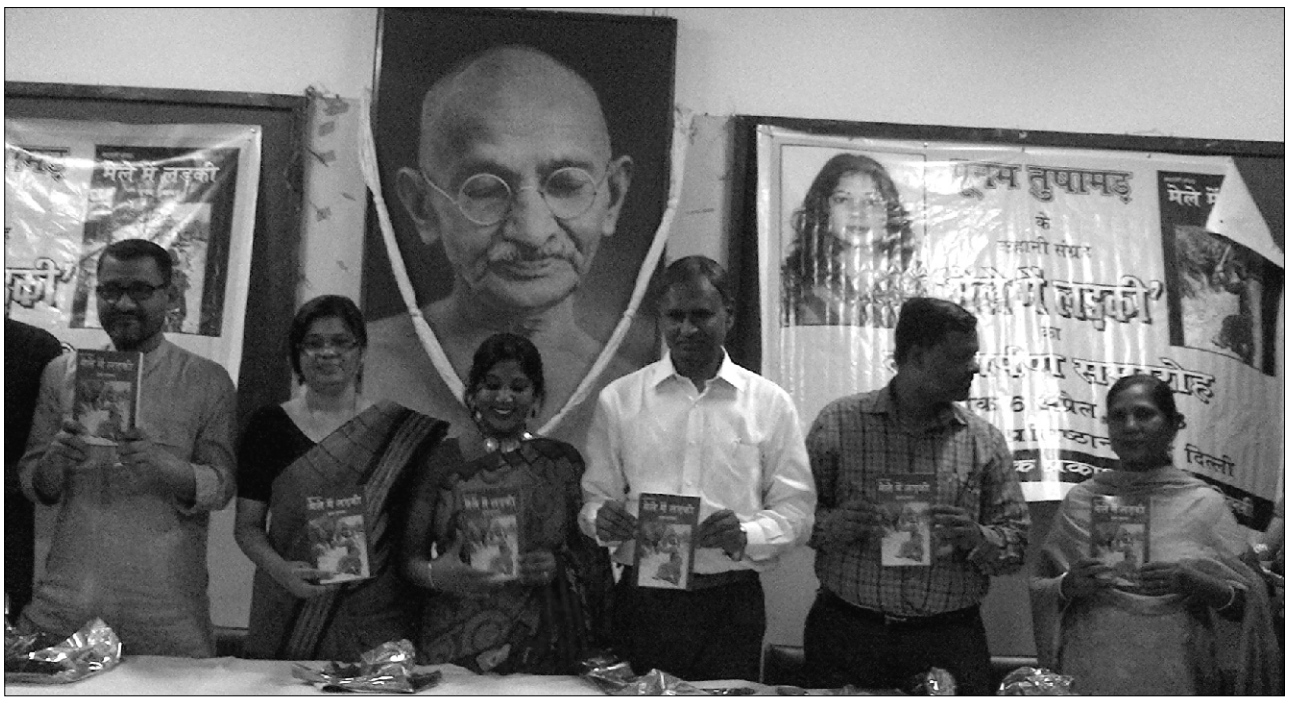

पुस्तक लोकार्पण के मौके पर उपस्थित विशिष्ट गण।

6 अप्रैल 2013 को गांधी शान्ति प्रतिष्ठान, नई दिल्ली में आज की चर्चित कवियत्री एवं लेखिका पूनम तुषामड़ के पहले कहानी संग्रह ''मेले में लड़की'' का लोकार्पण हुआ। गौर तलब है कि उनका पहला कविता संग्रह ''मां मुझे मत दो'' भी काफी लोकप्रिय रहा है। इस कार्यक्रम का आयोजन राईटर एवं जर्नलिस्ट एसोसिएशन के अरविन्द कुमार सिंह ने किया। इस पुस्तक को सम्यक प्रकाशन ने प्रकाशित किया है। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ दलित साहित्यकार ओमप्रकाश वाल्मीकि को करनी थी पर कदाचित स्वास्थ्य कारणों से वे आ नहीं पाए। विशिष्ट अतिथियों में दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष गोपेश्वर सिंह को आमंत्रित किया गया था। पर अति व्यस्तता के कारण वे भी कार्यक्रम में उपस्थिति नहीं हो पाए। प्रमुख वक्ताओं में स्तंभकार/चिंतक अवधेश कुमार, भाषा सिंह, अनीता भारती, हेमलता महिश्वर, सपना चमड़िया आदि के नाम थे। इनमें से भाषा सिंह एवं सपना चपड़िया किसी कारणवश अनुपस्थित रहे।

अरविन्द कुमार जी ने कहा कि उन्हें पता चला कि पूनम जी की कहानियां ग्रामीण पृष्ठभूमि की समसामयिक समस्याओं को उठाती हैं। इसी से प्रेरित होकर उन्होनें ने इसके लोकार्पण का आयोजन किया। अवधेश कुमार सिंह ने कहानियों की विशेषताओं को रेखांकित किया। पर साथ ही अपने वक्तव्य के अन्त तक आते–आते एक विवादास्पद बयान देकर चले गये। उन्होंने कहा कि हिन्दू धर्मग्रन्थों में कुछ भी गलत नहीं लिखा गया है। सामाजिक व्यवस्था में जरूर कुछ बुराईयां हैं। कार्यक्रम का संचालन कर रहे राज वाल्मीकि ने इसका खण्डन करते हुए कहा कि ब्राह्मणवादी व्यवस्था सदियों से उन्हें (दलितों को) मूर्ख बनाती रही है, किन्तु अब उन्हें और मूर्ख नहीं बनाया जा सकता। उन्होंने कहा कि मनुस्मृति और वेद पुराणों में दलित वर्ग के प्रति कितना जहर भरा है यह अब किसी से छिपा नहीं है।

विशिष्ट अतिथि के रूप में बोलते हुए जस्टिस पार्टी के प्रमुख डॉ. उदित राज जी ने भी अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि पूनम ने अपनी कहानियों में समस्याएं तो बताई हैं, पर समाधान प्रस्तुत नहीं किया। बावजूद इसके ये कहानियां स्त्री एंव जाति विमर्श को बखूबी उठाती हैं।

अनिता भारती जी ने पूनम तुषामड़ की कहानियों की तारीफ करते हुए भविष्य में और भी सारगर्भित रचनाएं देने की आशा व्यक्त की। अनिता जी ने कवर पेज की तारीफ करते हुए कहा कि यह एक मेहनतकश महिला का चित्र है तो दलितों की परिश्रम करने वाली संस्कृति को दर्शाता है। हेमलता महिश्वर ने उनकी समालोचना करते हुए उनकी कुछ विशेषताओं तो कुछ खामियों की ओर संकेत किया। जानकी देवी कॉलेज की प्रोफेसर रजनी अनुरागी जी ने भी उनकी कहानियो की विशेषताएं बताते हुए उन्हें शुभकामनाएं दीं।

राज वाल्मीकि ने पूनम जी की कुछ कहानियों जैसे 'शवाना का शव', 'गंगा', 'मंथन' तथा 'बिच्छू' की प्रशंसा करते हुए उन्हें विशिष्ट बताया।.

पूनम तुषामड़ ने अपनी ओर से बोलते हुए कहा कि मैंने अपनी पुस्तक लैंगिक भेदभाव, सामाजिक उत्पीडन, एवं वर्गीय शोषण के खिलाफ संघर्षरत स्त्री को समर्पित किया है। उन्होंने कहा कि उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से स्त्री–विमर्श को आगे बढ़ाने का प्रयास किया है।

इस अवसर पर बजरंग बिहारी तिवारी, अशोक कुमार दास, अजय नावरिया, कैलाश चंद चौहान, डॉ. पूरन सिंह, बेजवाड़ा विल्सन, सामाजिक कार्यकता कुसमलता एवं मृत्युंजय आदि शामिल हुए। इस अवसर पर पूनम तुषामड़ जी की माताजी, उनकी पुत्री तानया तथा पुत्र तनुज भी उपस्थित थे।

कांति के संपादक मोहम्मद अहमद खान ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

संपर्कः
पूनम तुषामड़
9968399711

अनुसूचित जाति/जनजाति संगठनों का अखिल भारतीय परिसंघ

दो दिवसीय राज्य स्तरीय कैडर कैम्प

दिनांक व समय : 27-28 अप्रैल 2013, प्रातः 10 बजे से

स्थान : डॉ. बाबा अम्बेडकर वर्कर्स ट्रेनिंग सेंटर, खडगिल, गंगानगर, हजारी पहाड़, नागपुर, (विदर्भ),महाराष्ट्र

मुख्य मार्गदर्शक

1. डॉ. उदित राज,राष्ट्रीय अध्यक्ष,
2. एस. यू. गडपायले
3. एन. एन. चोखांदरे ,
4. एम. के. कोंडाते

सम्पर्क

सिद्धार्थ भोजने 09545518795
सिद्धार्थ उके
सुनिल मेश्राम 07385708660

पाठकों से अपील

'वॉयस ऑफ बुद्धा' के सभी पाठकों से निवेदन है कि जिन्होंने अभी तक वार्षिक शुल्क/शुल्क जमा नहीं किया है, वे शीघ्र ही बैंक ड्रॉफ्ट द्वारा 'जस्टिस पब्लिकेशंस' के नाम से टी–22, अतुल ग्रोव रोड, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली–110001 को भेजें। शुल्क 'जस्टिस पब्लिकेशंस' के खाता संख्या 0636000102165381 जो पंजाब नेशनल बैंक की जनपथ ब्रांच में है, सीधे जमा किया जा सकता है। जमा कराने के तुरंत बाद इसकी सूचना ईमेल, दूरभाष या पत्र द्वारा दें। कृपया 'वॉयस ऑफ बुद्धा' के नाम ड्राफ्ट या पैसा न भेजें और मनीआर्डर द्वारा भी शुल्क न भेजें। जिन लोगों के पास 'वॉयस ऑफ बुद्धा' नहीं पहुंच रहा है, वे सदस्यता संख्या सहित लिखें और संबंधित डाकघर से भी सम्पर्क करें। आर्थिक स्थिति दयनीय है, अतः इस आंदोलन को सहयोग देने के लिए खुलकर दान या चंदा दें।

सहयोग राशिः

पांच वर्ष : 600 रुपए
एक वर्ष : 150 रुपए

डॉ. अम्बेडकर का मूल्यांकन नहीं हुआ

डॉ. उदित राज

जब 14 अप्रैल नजदीक आने लगता है तो डॉ0 अम्बेडकर के मानने वालों में असहजता पैदा होने लगती है कि जिन्होंने उनके एवं देश के लिए इतना किया, उनके जन्मदिन पर अवकाश नहीं होता। मूल धारा की मीडिया भले ही न इस बात को लिख और छाप रही हो, लेकिन सोशल मीडिया इस भेदभाव से पटी पड़ी है। व्यापक स्तर पर संवाद चल रहा है कि भले ही डॉ0 अम्बेडकर को पूरा समाज न माने लेकिन कम से कम 25 प्रतिशत वाला समाज, अनुसूचित जाति एवं जन जाति अपना मसीहा मानता है। सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक क्षेत्र में तो भेदभाव है ही लेकिन छुट्टी में भी है। पिछले वर्ष सर्वे कराया गया कि गांधीजी के बाद कौन महानतम भारतीय है, तो नतीजा डॉ0 अम्बेडकर के पक्ष में आया लेकिन मुख्यधारा की मीडिया ने छापा ही नहीं।

डॉ0 अम्बेडकर को मानने वालों के बीच इस समय तेजी से बहस चल रही है कि उनके मसीहा का मूल्यांकन कभी सही किया ही नहीं गया। भारत सरकार की सूची में 17 राजपत्रित अवकाश हैं, इसमें डॉ0 अम्बेडकर की जयंती शामिल नहीं है। जैन समाज की संख्या बहुत कम होते हुए भी महावीर जयंती का अवकाश है। ईसाई भी दलित–आदिवासी समाज की आबादी के अनुपात में कम हैं, फिर भी दो राजपत्रित अवकाश –गुड फ्राईडे एवं क्रिसमस डे हैं। सिक्खों की आबादी 2 प्रतिशत से भी कम मानी जाती है और गुरूनानक जयंती पर अवकाश है। मुस्लिम समाज की भी आबादी कम होते हुए भी चार अवकाश जैसे– ईद–उल–मिलाद, ईद–उल–फितर, ईद–उल–जुहा (बकरीद) एवं मुहर्रम हैं। बुद्धपूर्णिमा का भी अवकाश होता है। गैर राजपत्रित छुट्टियां 34 हैं, उसमें भी डॉ0 अम्बेडकर जयंती पर अवकाश नहीं है। पारसियों के नए वर्ष पर अवकाश है। इस सूची में भी दो अवकाश ईसाई समुदाय के नाम है। इस्लाम धर्म से भी संबंधित दो अवकाश हैं। गुरू तेगबहादुर के शहीदी दिवस की छुट्टी तो है ही। इनके लिए यदि अवकाश हैं तो दलितों व आदिवासियों को कोई ऐतराज नहीं है लेकिन भेदभाव क्यों? इसी तरह से अन्य प्रकार के भी भेदभाव जारी हैं, जिससे जातिवादी राजनीति को हवा मिल रही है और मिले भी क्यों न?

ये वर्ग भी धीरे–धीरे दूसरे समाज में पैदा हुए महापुरुषों का बहिष्कार करना शुरू दिए हैं, हालांकि अभी यह प्रत्यक्ष नहीं दिख रहा है। दलित अब यह सोचने लगे हैं कि हम क्यों दूसरी जाति एवं धर्म में पैदा हुए, महापुरुषों के जन्मदिन में शामिल हों या उसे मनाएं, जब वे नहीं हमारे में शामिल होते। जब यह समाज जागृत नहीं था तो बात कुछ दूसरी थी लेकिन अब परिस्थितियां बदल गयीं हैं। राजपत्रित एवं गैर राजपत्रित अवकाश की सूची में अम्बेडकर जयंती का उल्लेख नहीं है, लेकिन 14 अप्रैल तक आते–आते सरकार के ऊपर दबाव इतना बन जाता है कि अवकाश घोषित करना ही पड़ता है। जोरों से मांग यह उठी है कि राजपत्रित अवकाश की सूची में 14 अप्रैल को

भी शामिल किया जाए। एक प्रश्न यह उठता है कि आखिर में इतनी छुट्टियां हो जाएंगीं तो सरकारी कामकाज कैसे चलेगा? डॉ0 अम्बेडकर कर्मयोगी थे और देश को यदि विकसित देशों की श्रेणी में खड़ा होना है तो कम से कम छुट्टियां होनी चाहिए। इस तरह से और अवकाश समाप्त कर दिए जाएं तो क्या हर्ज है? किसी महापुरुष का जन्मदिन इसलिए मनाया जाता है कि हम उनके सिद्धांतों को मानें और देश को आगे ले जाएं और अवकाश नहीं होगा तो लोग देशहित में काम करेगें और वह बेहतर रूप से जयंती या समारोह मनाना माना जाएगा। विकसित देशों में अवकाश नाममात्र के हैं, लेकिन हमारे देश में इसकी भरमार है। यदि और महापुरुषों के जन्मदिन पर अवकाश घोषित न हो तो दलितों व आदिवासियों को भी कोई शिकायत नहीं होगी।

आउटलुक पत्रिका, सी.एन.एन. आई.बी.एन एवं निल्सन ने अगस्त–सितंबर 2012 में सर्वेक्षण कराया कि गांधी के बाद कौन महानतम भारतीय है। चयन की प्रक्रिया तीन चरणों में थी – मतदान, सर्वे एवं बुद्धिजीवी समूह की राय। तीन चरण में जूरी, जिसमें 28 भारतीय प्रबुद्ध थे, ऑनलाइन मतदान एवं मिस्ड कॉल, मार्केटिंग रिसर्च आदि के सर्वेक्षण ने महानतम भारतीय की फाइनल रैंकिंग में डॉ0 अम्बेडकर प्रथम स्थान पर रहे। डॉ0 अम्बेडकर को इंटरनेट एवं मिस्ड काल से मिले मत 19,91,734 थे जबकि जवाहर लाल नेहरू के पक्ष में 9,921, लता मंगेशकर के पक्ष में 11,520, बल्लभ भाई पटेल के लिए 5,58,835। इस तरह से डॉ0 अब्दुल कलाम, अटल बिहारी वाजपेयी, मदर टेरेसा, जी. आर.डी. टाटा, सचिन तेंदुलकर, इंदिरा गांधी आदि भी इस दस की प्रतिस्पर्धा में थे जो सभी डॉ0 अम्बेडकर से बहुत पीछे थे। जिस दिन सी.एन.एन.आई.बी.एन. ने परिणाम घोषित किया, टिप्पणीकार एवं अतिथि के रूप में राजदीप सरदेसाई ने अमिताभ बच्चन जैसे लोगों को बुलाया, जो सही मूल्यांकन नहीं कर सके। कम से कम एक पढ़े–लिखे दलित को ही बुला लेते तो वह भी डॉ0 अम्बेडकर को विजेता घोषित होने के उपलक्ष्य पर उनके सही योगदान को बता तो सकता। सभी ने कहा कि उन्होंने भारतीय संविधान लिखा और वह सबसे बड़ा योगदान है, जबकि यह सच नहीं है। सबसे बड़ा योगदान डॉ0 अम्बेडकर का दलितों को गुलामी से आज़ाद कराना एवं समतामूलक समाज का संघर्ष रहा है। इसको न तो अन्य इलेक्ट्रानिक चैनलों ने कवर किया और न ही न्यूजपेपर ने, अगर किया भी तो नहीं के बराबर जिससे दलितों में भारी आक्रोश पैदा हुआ।

यह अतिश्योक्ति नहीं है, बल्कि यथार्थ है कि डॉ0 अम्बेडकर जयंती जितने बड़े पैमाने पर इस देश में मनायी जाती है किसी भी महापुरुष का नहीं होता और यह लगभग दो महीने तक चलता है। जैसे–जैसे समाज में जागृति बढ़ रही है, डॉ0 अम्बेडकर के विचार उभरकर आते जा रहे हैं। प्रो0 जे. सोमासेकर, विजया नगर यूनिवर्सिटी, कर्नाटक ने बताया कि अधिकतर विश्वविद्यालयों में गांधी जी से ज्यादा पी.एच.डी. डॉ0 अम्बेडकर पर हुई है। यह भी भेदभाव की बात है कि ऐसी बातें मीडिया में नहीं आ रही हैं। राष्ट्रपति ओबामा जब भारत आए तो संसद में डॉ0 अम्बेडकर का नाम उद्धृत किए बिना नहीं रहे। नेल्सन मंडेला भी डॉ0 अम्बेडकर को आदर्श मानते हैं। इतिहास अन्याय का ज्यादा और न्याय का कम होता है। जिस जाति या वर्ग की सत्ता होती है या अधिक शिक्षित होता है, इतिहास उसी के पक्ष में लिखा जाता है। कोई व्यक्ति या महापुरुष सत्ता के सहयोग से या परिस्थितिवश ज्यादा मशहूर हो सकता है, लेकिन भविष्य उसी का होता है, जिसके विचारों से लोगों को लाभ मिलता हो। डॉ0 अम्बेडकर के विचारों से कम से कम दलित एवं आदिवासी लाभान्वित हुए हैं और आने वाले दिनों में दूसरे वर्गों और धर्मों के लोग भी मानने के लिए मजबूर हो जाएंगें। जब तक इस देश में जाति है, तब तक न भ्रष्टाचार मिट सकता है और न ही लिंग भेद। इनके संघर्ष का सार ही है, जातिविहीन समाज की स्थापना। सिकंदर के हाथों भारत पराजित हुआ और 1947 तक हार पर हार होती रही। इसका मुख्य कारण जाति रही है। डॉ0 अम्बेडकर का भले ही अभी तक सही मूल्यांकन नहीं हुआ है, लेकिन अब इस आंधी को रोका नहीं जा सकता। मनुवादी मानसिकता के लोग अब भी सुधर जाएं नहीं तो सभी को इसकी कीमत चुकानी पड़ी है और आगे भी पड़ती रहेगी।

Dr. Ambedkar Has Not Been Given A Fair Deal

Dr. Udit Raj

Every year around 14th of April, followers of Dr. Ambedkar start feeling uncomfortable about the fact that a person who had done so much for them and the country as a whole, holiday is not declared on his birthday. The mainstream media may not be highlighting this fact but the social media is acutely aware of this fact. A dialogue is taking place on a large scale that even though the entire Indian society may not realize the importance of Dr. Ambedkar but atleast the 25% of the population consisting of SC/ST people consider him as their Messiah. There is not only discrimination in social, religious and political matters but it is very much there in the matter of holidays also. According to a survey conducted last year as to who is the greatest Indian after Gandhiji, the result was in favour of Dr. Ambedkar but thje mainstream media did not give due publicity to this fact.

A fierce debate is going on amongst the followers of Dr. Ambedkar that their Messiah has not been given a fair deal. In the Government of India list, there are seven gazetted holidays in which Dr. Ambedkar's birth anniversary does not find a place. Despit the fact that the population of Jains is very small, Mahavir Jayanti has been declared as a holiday. Even the population of Christians is less in comparison to the population of Dalits and Adivasis, yet there are two gazetted holidays for Christians, Good Friday and Christmas. The population of Muslim community is also less but four gazetted holidays have been declared for their festivals etc., Id-ul-Milad, Id-ul'Fitr, Id-ul Zuha (Bakrid) and Moharram. Buddh Purnima has also been declared a gazetted holiday. There are 34 non-gazetted holidays buit even in these holidays, Dr. Ambedkar's birth anniversary does not find a place. There is a holiday for Parsi new year. In this list also, there are two holidays for Christian community and two holidays for the Muslim community. Of course there is a holiday for the martyrdom day of Guru Tegh Bahadur. Dalits and Adivasis have no objection for the holidays declared for different communities and relitions but why should there be discrimination against Dalits and Adivasis. Like this, there are discriminations against Dalits and Adivasis in other areas also which gives rise to caste politics and rightly so.

People belonging to SC/ST communities are also gradually leaning away from the great people of other communities. Dalits have now started arguing as to why they should take part in the festivities of great people belonging to other religions or communities when others do not respect their great people. Earlier the situation was different when there was not much of awarness among Dalits and Adivasis but now the situation has changed. Dr. Ambedkar's birth anniversary does not find a plce in the gazetted or non-gazetted list of holidays, but just close of 14th April, so much pressure is built on the Government, that the Government is forced to declare a holiday on the 14th April. A very strong opinion is building up that 14th April may also be included in the list of gazetted holidays. Very often a question is raised that with the increased number of holidays, working of the Government will be greatly impeded. Dr. Ambedkar was a Karmayogi and if we have to become a developed country, then the number of holidays should be the least. In this sense, there is no harm if the number of gazetted holidays should be further reduced. Birth anniversary of a great person is celebrated so that people may follow their ideology and take the country forward. If holiday is not declared on the birth anniversary of a great person, then the people will work for the development of the country and this will be deemed to be real celebration of the birth anniversary of a great person. There are really few holidays in developed countries but the number of such holidays in our country is quite large. If holidays are not declared on the birth anniversaries of other persons,then Dalits and Adivasis will also have no grudge.

Outlook magazine, CNN, IBN and Nelson conducted a survey in August/September 2012, as to who is the greatest Indian next to Gandhiji.

The survey was done in three stages – voting, survey and the opinion of the intellectual community. In the three stage survey, there was Jury which had 28 Indian intellectuals, on-line voting and missed calls, marketing research etc. In the survey, Dr. Ambedkar's ranking was the highest. Through interest and missed calls, Dr. Ambedkar had polled 19,91,734 votes, Nehru had polled 9,921 votes, Lata Mangeshkar had polled 11,520 votes and Vallabh Bhai Patel had polled 5,58,835 votes. In this survey, Dr. Abdul Kalam, Atal Bihari Vajpayee, Mother Teresa, J.R.D Tata, Sachin Tendulkar, Indira Gandhi etc. were also in the race but all of them lagged far behind Dr. Ambedkar. The day on which CNN & IBN declared the results, Rajdeep Sardesai invited people like Amitabh Bachhan as guests and critics who could not make a fair evaluation of the contribution of Dr. Ambedkar. Had they invited atleast one educated Dalit leader on this occasion, then he would have highlighted the contributions of Dr. Ambedkar to the Indian society. All the speakers on this occasion said that Dr. Ambedkar's greatest contribution was that he was the author of the Indian Constitution whereas this is not a fact. His greatest contribution was that he worked for the liberation of Dalits and the establishment of a society based on equality. This event was neither covered by other TV channels nor the print media and even where it was done, it was only a passing reference which greatly angered Dalit community.

It is not an exaggeration but a reality that the birth anniversary of no other leader is celebarated on a scale on which the birth anniversary of Dr. Ambedkar is celebrated throughout the length and breadth of the country, which lasts for nearly two months. With increased awareness in the society, Dr. Ambedkar's ideology and thoughs are becoming more and more popular. Prof. J. Somasekar, Vijya Nagar University, Karnataka, has said that in most of the Universities, more number of students have submitted Ph.D. theses on Dr. Ambedkar than on Gandhiji. It is again due to discrimination that that such important matters do not find a place in the media. When American President Obama came to India, then he could not help mentioning the name of Dr. Ambedkar in the Indian Parliament. Nelson Mandella also considered Ambedkar as his Ideal. History is more by the side of injustice rather than by the side of justice. Whichever community is more powerful or more educate, history stands by it. Any person or a great person can become popular because of his association with power or because of the circumstances but the future belongs only to a person whose ideas and thoughts benefit the people at large. At least Dalits and Adivasis have greatly benefited from the thoughts and ideology of Dr. Ambedkar and in the days to come, people belonging to other communities and religions will be forced to adopt his ideas. So long as there is caste system in the country, corruption cannot be eliminated from the country nor will there be end to gender discrimination. The gist of Dr. Ambedkar's ideology is the establishment of casteless society. India was defeated at the hands of Alexndar the Great and till 1947, we suffered one after the other defeat. Main reason for these defeats was casteism. Maybe, correct evaluation of Dr. Ambedkar's contribution has not taken place so far, but it is a fact that the onward march of Dr. Ambedkar ideology cannot be stopped any more. Followers of the Manuvadi mindset will do well to change their mindset otherwise they will have to pay a heavy price.

Dr. Mastram Kapoor breathed his last on 02.04.2013

Dr. Mastram Kapoor was born on 22.12.1926 in Himachal Pradesh. After doing his M.A. degree, he did Ph.D. in Child Literature. He served in Delhi Secretariat as Information Officer and retired from there in 1981.

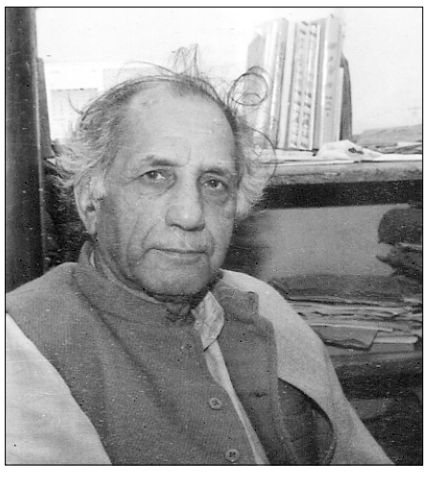

22.12.1926-02.04.2013

Dr. Mastram Kapoor, a great social reformer , a prolific Hindi writer and an eminent journalist took active part in the freedom movement and had a long association with socialist movement. He was particularly influenced by the writings and ideologies of Mahatma Gandhi, Dr. Rammanohar Lohia, Jaiprakash Narayan, Acharya Narendra Deva, Dr. B.R. Ambedkar and Madhu Limaye. He had written, edited and translated more than 100 books on literature, social and political thought, education and children's literature including 18 volumes of collected works of Dr. Lohia. Some of his famous books are 'Kaun Jaat Ho', ' Naak Ka Doctor' , 'Raasta Bandh Kam Chalu', 'Vipathgami', 'Ek Sadi Banjh' and 'Do Duni Panch'. He has left behind his wife, one son, three daughters, daughter-in-law, 3 grand daughters and three grand sons.

He was a man of simple habits and was greatly interested in classical music and sports like cricket and football.

May his soul rest in peace.

(Rest of Page-8...)

Ambedkar and Dalits

Ambedkar laid maximum emphasis on education but even on this issue, people have not come upto his expecations.Whatever education standards have been achieved by SC/ST people, it is only because of the fond hope of getting jobs through reservation. According to him, the purpose of education is not only to get a job but also to work for an equitable society. People of those castes who have become Ambedkarites, even they are not making any efforts to bring Dalits belonging to other castes to bring awareness in them. The sole objective of education for them is to get jobs.

Dr. Ambedkar's ideology is not only for the upliftment of Dalits but also the establishment of an equitable society. With the passage of time, the impact of the Ambedkar ideology is increasing.It is no exaggeration to say that in future his stature will become bigger than any other person. Maybe because of the mindset of the upper caste people, he has not got a stature which he richly deserves but the truth will soon come to the surface. In the age of privatization and globalization, selfish Dalits should also change their mindset and sincerely follow the idealogy of Dr. Ambedkar for their development which appears a difficult task.

Constitution of National SC/ST/OBC Students & Youth Front (NSOSYF)

One lakh students will be brought under the banner of this Front.

Dr. Udit Raj

Some students and youths, belonging to Brahmin, Rajput and Vaishya castes, who constitute only 15% of the society, raised a big hue and cry in Delhi against corruption and rape. How is it that Dalits, Backwards, Minorities and others belonging to progressive groups cannot launch a struggle for their rights and self-respect. Different groups of students and youths from these communities are individually holding demonstrations for their rights but their impact is not visible on the surface nor is likely to be so. Main reason for this situation is that these groups have not got a national level leader. Under the leadership of Dr. Udit Raj, All India Confederation of SC/ST Organizations has been in existence for the last 15 years in a strong way. This is the only organization which has been raising burning issues and has been working like a permanent political party. If SC/ST/OBC students decide to associate themselves with the Confederation, then this premier organization will not only guide and educate them but will always stand by them in all their struggles. Struggle for reservation in private sector has been launched by the Confederation . The beneficiaries of this struggle will be students and youths and not the office bearers of the Confederation. It is because of the struggle of Confederation that three constitutional amendments will be adopted and reservation was saved as a result of which lakhs of SC/ST students and youths have reaped the fruits of reservation. If the students and youths launch their campaigns at School, College and University levels for their amenities and rights, can it be helpful in achieving goals of their lives? Will they be able to fulfil the dreams of their parents? Government jobs are shrinking fast and it is only through reservation in private sector that SC/ST students and youths who are in majority will be able to get jobs. At present, there is maximum scope of jobs in the private sector. Dreams of students and youths will be realized with the constitution of National SC/ST/OBC Students & Youth Front (NSOSYF). In the year 2013-14, one lakh students and youths will be brought under the banner of this Front.

So far SC/ST students and youths have not got proper leadership and direction. Their approach is restricted to school and college problems like admission, hostel accommodation and scholarship. They cannot get even these demands fulfilled because they are not affiliated with any national level organization. Despite all these problems, students and youths can achieve their main goal of getting jobs. Even though they take less part in the activities at school, college and university level, but their main goal should be to affiliate themselves wholeheartedly with National SC/ST/OBC Students and Youth Front. Why the SC/ST/OBC students and youths cannot organize a much larger front as compared to the front organized by Anna Hazare and Kejriwal? Some youths and students are under the wrong impression that by launching a struggle by remaining in their own organizations, they can achiev big goals which is only a half-truth. Whether it is in the field of knowledge or any struggle, an organization can achieve its goal only if it is of the level of organizations like SFI, AISF, ABVP, ASUI etc. NSOSYF is being conceived on the lines of NSUI, student front of the Congress Party and BJP's ABVP. We can call our organization a parent organization also. Students and youths, joining any walk of life, after coming out from schools and colleges will get a ready-made platform in the form of NSOSYF just as NSUI is to Congress. There are many students and youths from colleges and universities who have got brilliant ideas and energy but there is no parent organization under whose banner they can work and it is through the medium of the Confederation that a proper direction can be given to the society. If SC/ST students face any problems in any University, they can take advantage of the strength of NSOSYF and resolve their problems expeditiously. Students and youths can shed their intellectual inhibitions and use their knowledge and experience for the welfare of the society which will ultimately throw up political leaders from amongst them. In the present context, most of the SC/ST/OBC leaders believe in doing lip service because like the upper caste people, they do not have any national level organization where they could get acquire social and political knowledge and experience. It is no exaggeration to say that the most important task is to organize the younger generation which NSOSYf has undertaken upon itself to do.

For all types of competitions, some pople have set up coaching institutes and presume that by imparting knowledge, welfare of students and youths can be achieved but this again is a half-truth. The number of Dalits, Adivasis and OBC educated people and youths has increased but the number of Government jobs has not increased in that proportion. In fact, the number of Government jobs has shrunk. Under these circumstances, despite the competitive skills achieved by Dalits, Adivasis and OBC educated people, only 4 to 5% of them could become IAS, IPS, Doctors, Engineers, Clerks, Stenos, Constables, Armymen etc. and the rest will remain unemployed. At the national level, there is no organization to represent the interests of the communities which could propagate the ideals of Phule, Shahu and Dr. Ambedkar and there should be an organization which should prepare those SC/ST and OBC students, who are not able to qualify for the Government jobs for other fields including social and political leadership. There is now greater scope of jobs in the private sector and without reservation in the private sector, all the education and skills acquired by SC/ST/OBC people will become useless. People of these communities hardly take to trade and industry and the Confederation has now come to the view that even though a lot of development has already taken place in social and political fields and is further taking place, but now the time has come when steps should be taken to make progress in the economic field. NSOSYF will make significant contribution in this area so that the people of these communities who are not successful in Govt jobs, social and political fields, can enter the world of trade and industry and realize their dreams.

In our history after Independence, no student wing of any political party has launched any struggle to resolve the problems of SC/ST/OBC students and youths. It is well known that most of the students of the political parties have been under the control of Manuvadis and even if it is so, why should they fight for our causes. The upper caste people have shown discrimination towards us for centuries and which is continuing even now and under these circumstances, it is imperative for us to make our own organization which has not been done till date. Some upper caste students are also Ambedkarites and progressive in their outlook and for them our doors shall always remain open.

Whosoever helps the one-lakh strong SC/ST/OBC students and youths Front called NSOSYF will be doing great service to these communities which we owe to them and must repay. Whosoever gets this information, should pass it to maximum number of SC/ST/OBC students and youths and persuade them to become members of NSOSYF. Everybody's contribution who has helped in raising a strong force of 1 lakh persons will be duly recognized.

Appeal to the Readers

You will be happy to know that the **Voice of Buddha** will now be published both in Hindi and English so that readers who cannot read in Hindi can make use of the English edition. I appeal to the readers to send their contribution through Bank draft in favour of **'Justice Publications'** at T-22**,** Atul Grove Road, Connaught Place, New Delhi-110001. The contribution amount can also be transferred in 'Justice Publications' Punjab National Bank account no. 0636000102165381 branch Janpath, New Delhi, under intimation to us by email or telephone or by letter. Sometimes, it might happen that you don't receive the Voice of Buddha. In that case kindly write to us and also check up with the post office. As we are facing financial crisis to run it, you all are requested to send the contribution regularly.

Contribution:
Five years : Rs. 600/-
One year : Rs. 150/-

Discrimination Against Dalits in the Civil Services Examinations

A. K. Biswas

Achyutananda Das was the country's first SC to make it to the IAS in 1950 itself when the UPSC conducted its first examination to recruit personnel for the IAS and Central Services when he was the topper of his batch in the written examination. Achyutananda Das from West Bengal secured 613 out 1050 marks in written examination while N. Krishnan from Madras secured 602 marks but in the interview, Krishnan secured 260 out of 300 as against 110 by Achyutananda Das thus leaving him way behind Krishnan due to his latter's performance in the viva-voce test. The case of another candidate , Aniruddha Dasgupta also from West Bengal is revealing when compared to the performance of the topper Achyutananda Das from the table given below.

The margin of marks between Achyutananda Das and N. Krishnan in written papers being 11 only, it may not be a big surprise if N. Krishnan outstripped Achyutananda Das in the interview. But the real surprise, which raises so many other issues, is when a comparison of Achyutananda Das's performance is made with that of Aniruddha Dasgupta. Dasgupta secured the highest marks in viva-voce among all successful candidates while he got the lowest aggregate as well as the lowest average of all those qualified for appointment to the IAS and Allied Services. Further, he scored the lowest marks of all the qualified candidates in General Knowledge.

Normally any candidate strong in General Knowledge is usually expected to fare better in the Selection Board because of his confidence level and outstanding performance in the written test. Despite scoring much less marks than N. Krishnan and Achyutananda Das, Aniruddha Dasgupta scored 265 marks in the viva-voce followed by Krishnan with 200 marks and Achyutananda Das scoring only 110 marks, thus leaving him far behind. Ultimately, Krishnan topped, Aniruddha Dasgupta occupied the 22nd position and Achutananda Das was assigned the 48th position. The case of Nampui Jam Chonga from Assam, who was the country's first tribal in the 1954 IAS examination bears a striking similarity with that of Achyutananda Das. Nampui Jam Chonga scored third highest marks in General Knowledge but got only 160 marks in Personality Test as against 240 scored by Rathindra Nath Sengupta and was ultimately placed at 64th position, the last in the merit position for appointment to the IAS whereas Rathindra Nath Sengupta who got 692 marks as against 747 scored by Nampui Jam Chonga in written papers.

There is no published record to examine the questions which were posed by the Selection Board to Das, Dasgupta and Krishnan and the answers offered by them. If those were available, posterity would have benefited by acquiring the tools and techniques adopted by candidates like Dasgupta as to how to impress the Selection Board of the UPSC despite miserable written scores.

Name of Candidate	Compulsory Subjects* (100 marks each)			Optional Subjects (200 marks each)			Total 1050	viva voce (300 marks)	Grand (1350)
	EE	GE	GK	I	II	III			
N. Krishnan	105	68	69	112	127	121	602	200	862
Aniruddha Dasgupta	75	100	40	78	101	101	494	265	760
Achyutananda Das	80	76	79	106	141	127	613	110	719

EE–English Essay, GE–General English and GK–General Knowledge

Confederation is Continuosly Struggling

Govt plans law to ensure 22.5% spending on dalits, tribals

Subodh Ghildiyal

NEW DELHI: The Centre is mulling a law to ensure that 22.5% of the Union Budget is exclusively spent for dalit and tribal welfare, a move seen as an outreach to the Congress support base that is bristling at the party's failure on the flagship demand to restore reservation in promotions.

A law on dalit and tribal sub-plans would go beyond the symbolic to bind the government to spend for these groups in proportion to their population.

Presently, the SC sub-plan (SCSP) and tribal sub-plan (TSP) are governed by executive orders, seen by observers as the reason behind their failing to take off after three decades.

In a significant move, the Union social justice ministry has constituted a working group to thrash out "central legislation on SCSP and TSP for their effective implementation". Significantly, the panel has been asked to give its report by April-end, a short deadline that insiders say points to the urgency of legislating.

The sub-plans mandate every central ministry or department to spend around 15% and 7.5% of their budget exclusively for dalits and tribals. The schemes have been unsuccessful because of indifference of officialdom and unceasing disputes about which ministry has to spend how much.

Many believe a penal provision in the proposed law can be the catalyst to force the government to hammer out nitty-gritties and enforce implementation for fear of punishment.

While the law, especially with penal provision, has been long advocated by activists and strongly resisted by bureaucracy, Congress seems to be eyeing its political potential ahead of the 2014 elections. The 'Jaipur declaration' after the 'chintan shivir' demanded a central legislation for effective implementation of sub-plans that suffer from "insufficient allocation and utilization".

A statutory status for 'dalit budget' can help in wooing SCs/STs who are angry at Congress not restoring 'promotion quota' because of the wishes of OBC leaders like Mulayam Singh Yadav and its own upper caste lobby. Ideologues believe that Congress did not try hard enough to push the constitutional amendment bill and instead shot from the shoulders of SP and BJP.

That the law has emerged as a sort of silver bullet in Congress strategy is evident from Andhra Pradesh promulgating it in December. Sources said Congress chief Sonia Gandhi has cited it as "priority agenda".

The twin plans have been mired in bureaucratic resistance and differences. Ahead of the unveiling of the 12th Plan, Union social justice ministry accused the Planning Commission of including the expenditure of exempted ministries to boost the achievements under sub-plans.

The government decided to factor in 'estimated consumption proportion of SCs' to show it under the sub-plan - like how much did the dalits use a road or an airport to include it as money spent under the sub-plan.

(Courtesy : The Times of India)

VOICE OF BUDDHA

Publisher : Dr. UDIT RAJ (RAM RAJ), Chairman - Justice Publications, T-22, Atul Grove Road, Connaught Place, New Delhi-110001, Tel: 23354841-42

● Year : 16 ● Issue 10 ● Fortnightly ● Bi-lingual ● 1 to 15 April, 2013

बाबा अम्बेडकर के 123वीं जन्म दिवस पर आप सबको बधाई।

- डॉ. उदित राज

Ambedkar and Dalits

Dr. Udit Raj

The greatest festival of Dalits is the Birthday of Dr. Ambedkar and for Dalits, he is also the greatest God. This year we are going to celebrate his 123rd Birth Anniversary and everybody knows that his Birthday falls on 14th April. In fact, people start the celebrations from the 10th of April which continue for the whole month of April and extends to May. Dalit Employees and Officers' Organizations organize functions, meetings and conferences for the birthday celebrations till July and August depending on their personal convenience. When circumstances are not suitable for holding such functions in April or May due to non-availability of VIPs, who are normally Ministers or senior bureaucrats of the Ministries/Departments, then the dates for such programmes are advanced as far as August. Particularly after his death, Dr. Ambedkar's stature is increasing with the passage of time.His birth-day celebrations are not organized at Government level. There is perhaps hardly any individual in India or anywhere else in the world whose birthday celebrations are organized in every village, town, every nook and corner of a city as it is done in the case of Dr. Ambedkar. On the other hand, birthday celebrations of Mahatma Gandhi and other great people are celeberated at the Government lelvel and not by the people in general and even if it is done so, it is in a low key. An individual can become and popular but if the society does not gain by his ideas and principles, then his greatnesss gets confined to the pages of history only.

Dr. Ambedkar's followers are never tired of declaring from roof tops that that they are missionaries of Baba Saheb's ideology. There is also a competition among Dalits as to who is a genuine Ambedkarite and who is a fake one. Bahujan Samaj Party was founded on the 14th April and it is not difficult to make out as to why this day was selected. People started claiming that the incomplete mission of Dr. Ambedkar will be completed by Kanshi Ram Ji. People's curiosity increased and meetings and conferences were held in every nook and corner of the country on this issue. Initially, such meetings and conferences were quite successful in Punjab and Haryana and gradually Uttar Pradesh became a centre of these activities. The followers were made to believe that dignity and rights can be acquired by grabbing power. This approach was different from the basic idealogy of Dr. Ambedkar.The gist of Dr. Ambedkar's ideology is the first condition to set right the evils of the Indian society is to break the shackles of caste system.The group which believed in breaking the shackles of the caste system invited Dr. Ambedkar in 1935 at Lahore to preside over this conference to which Dr. Ambedkar initially hesitated but finally accepted the offer under great pressure. But when the organizers of the programme came to know that his speech would concentrate on bringing about change by completely breaking the shackles of caste system, then they cancelled the holding of the Conference itself and this information was also given to him only after the publication of his presidential address because of which he was greatly disturbed. While Dr. Ambedkar never compromised on his principles, but the party which claimed that it was formed to carry forward the principles and ideology of Dr. Ambedkar completely breaking the shackles of caste system, did just the opposite by dividing Dalits into sub castes and sub-sub castes thus further fortifying further the stranglehold of the Hindu caste skystem.The strengthening of the caste system only helps Brahminism which leads to further disparities in the society. Nearly all the parties are encashing their caste vote-bank to grab power, and maybe it is all right, but when a political party is formed by using the name of a great social reformer, while actually

doing everything against his ideology, then there is no sense in claiming to follow the idealogy of such a great social reformer.

Had there been no reservation for SC/ST people in politics and Government jobs, the position of these people would have been the same as it was before Independence. In the absence of reservation in areas like Media, industries, films, import-export, higher education, manufacturing, telecom and IT, share of the SC/ST is negligible. Dr. Ambedkar launched his struggle for the right of reservation for SC/ST people in the hope that SC/ST candidates who are elected by the people in the legislatures or selected for different Government jobs will give maximum importance to the interests of the SC/ST people but most of them have become arrogant and selfish. Senior SC/ST officers particularly treat themselves as great scholars whereas the fact is that they would not have reachewd the present position but for reservation. All those SC/ST people who have acquired status , prestige and wealth because of reservation not only owe a duty towards the SC/ST people but also the leadership which has struggled for them for reservation. Kanshi Ram Ji a substantial chunk of the time, intellect and money of SC/ST employees and officers and Bahujan Samaj Party is the outcome of their efforts. Still , most of the representatives of the people and employees are taking advantage of reservation for their selfish ends.

Buddhism had the right approach for the elimination of the caste system and establishment of equitable society, but how many Dalits and Tribals believe in this theory. There may not be hardly any person who does not quote a famous saying of Dr. Ambedkar, "I am born as a Hindu which is not in my control but I will not die as a Hindu". Everybody knows as to how many persons who claim to be followers of Dr. Ambedkar believe in Buddhism. The SC/ST people get jobs because of reservation but worship Hindu Gods and Godesses for the same. Dr. Ambedkar advised his followers not believe in any God or destiny and whatever is achieved, it is only through one's efforts. We think of nearly 33 crore Hindu Gods and Godesses and at the time of Independence, population of our country was about 45 crore. Population of Dalits and Adivasis is about 11 crore. Had just three Hindu Gods and Godesses taken care of one Dalit, they would not have to lead the life of an untouchable and because of their blessings , most of them would have become Govt employees, officers and elected representatives of the people. Even here, Dalits and Adivasis have not stopped having belief in God or other age-old rotten Hindu customs.

Presently, some Dalit leaders are deeply involved in corruption. How can they call themselves Ambedkarites when hardly any other intellectually honest person of the stature of Dr. Ambedkar would have been born. He was in the habit of not sparing anyone. Anybody who is intellectually honest, he just cannot indulge in economic corruption nor he can be selfish. The goal of such a person is only the welfare of the society. Can an Ambedkarite tell a lie? SC/ST people are not hesitating to use any immoral means including caste vote bank for achieving their selfish goals. Dr. Ambedkar had said that the real yardstick of development for Dalits is the development of women. How many persons are there in the society who are in favour of freedom and equal rights for women or are struggling for the same? In the end, even those few persons becme a victim of male chauvinism. Of course, it can be said that Dalit women have got more freedom than upper caste women. Dr.

(Rest on Page-5...)

Publisher, Printer and Editor - Dr. UDIT RAJ (FORMERLY KNOWN AS RAM RAJ), on behalf of Justice Publications, T-22, Atul Grove Road, Connaught Place, New Delhi-110001, Tel: 23354841-42, Telefax:23354843, Printed at Sanjay Printing Works, WZ-4A, Basai Road, New Delhi.

Website : www.uditraj.com E-mail: dr.uditraj@gmail.com Computer typesetting by N. K. Karn